हमारा पर्यावरण

नरेश कुमार
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूड़की।

पर्यावरण शब्द संस्कृत भाषा के 'परि' उपसर्ग (चारों ओर) और आवरण से मिलकर बना है जिसका अर्थ है ऐसी चीजों का समुच्चय जो किसी व्यक्ति, जीवधारी को चारों ओर से आवृत किये हुए है। पर्यावरण में सभी सजीव निर्जीव तत्व होते हैं। जो मानव जीवन को प्रभावित करते हैं। पर्यावरण हमारे चारों ओर व्याप्त है। हम सब अपनी समस्त, क्रियाओं से इस पर्यावरण को भी प्रभावित करते हैं, अतः मानव जीवन सुचारू रूप से चले इसके लिए संतुलित पर्यावरण बहुत आवश्यक है उसमें मानव सहित समस्त जीवधारी, पेड पौधे, जीव–जन्तु आदि रहते हैं। उसमें पलते–बढ़ते, पनपते और अपनी–अपनी स्वभाविक क्रियाओं का विकास करते हैं। हमारे चारों ओर की भूमि, हवा और पानी ही हमारा पर्यावरण है। इससे हमारा सम्बन्ध बहुत पुराना है। लेकिन इससे भी पुराना संबंध पौधों और जानवरों का है। हमारे लिए सभी जानवर एवं पेड़–पौधे बहुत ही आवश्यक हैं। इनके बिना हमारी जिंदगी की गाड़ी आगे नहीं चल सकती। यह पर्यावरण जीव–जन्तुओं के कारण ही जीवंत है।

जनसंख्या वृद्धि के साथ–साथ मानव की आवश्यकताओं में तेजी से वृद्धि हुई है। विकास कार्यों के लिए प्राकृतिक साधनों के दोहन से पर्यावरण का निरन्तर अपघटन होता जा रहा हैं।

मानव द्वारा आर्थिक उद्देश्य और जीवन की विलासिता के लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु प्रकृति के साथ व्यापक छेड़छाड़ के क्रिया–कलापों ने प्राकृतिक पर्यावरण का संतुलन नष्ट कर दिया है, जिससे प्राकृतिक व्यवस्था के अस्तित्व पर संकट उत्पन्न हो गया है। अभी हाल ही का जीता जागता उदाहरण है–हिमाचल क्षेत्र और उत्तराखण्ड में लैंड स्लाईड बहुत अधिक हुयी हैं। नई–नई बीमारियाँ, संक्रामक रोगों का प्रसार और जीवनोपयोगी वस्तुओं का अभाव प्रदूषित पर्यावरण की ही देन हैं।

विज्ञान–युग के मानव की छेड़छाड़

एक ओर विज्ञान ने दिन–दूनी और रात–चौगुनी उन्नति से जहाँ हमें ढेरों फायदे पहुँचाए हैं वहीं कई नुकसान भी पहुँचाए हैं, और बीसवीं सदी के बीच तो पर्यावरण के प्रति सभ्य मानव ने बहुत छेड़छाड़ की है। आए दिन मानव को अपनी छेड़छाड़ महंगी पड़ रही है क्योंकि प्रकृति का संतुलन डगमगाने लगा है और कई बुरे परिणाम मानव के समक्ष मुहँ बाए हुए उसे घेरे खड़े हैं।

इस बारे में हमें कई पहलुओं से सोचना होगा। हमारा असंयमी होना, दूरदर्शिता न रखना, सोच विचार किए बिना कार्य करना, तुरन्त फायदे देखना और आबादी को बढ़ते देना आदि कई बातें हैं जो इन परिणामों के लिए जिम्मेदार हैं।

अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए मकान बनाने के लिए, खेती करने, पैसे बनाने तथा अन्य उपयोगों के लिए पेड़ों और जंगलों का सफाया हो रहा है और इसके साथ जीवों का भी। रोज ही नई–नई सडकें, इमारतें, फैक्ट्रियाँ आदि बन रही हैं। हानिकारक रसायनों, गैसों व अन्य चीजों का जोरों से प्रयोग किया जा रहा है। मोटर–गाड़ियों वाली सड़कों के किनारे धूल से सने और रोगों से ग्रस्त पेड–पौधे चुपचाप रोते हुए अपनी कहानी कहते हैं। सारी गंदगी और बेकार बचे–कुचे पदार्थ नदियों व नालों में डाल दिए जाते हैं और कमाल देखिए कि यही पानी फिर पीने के लिए प्रयोग में लाया जाता हैं। अपने घरों व बाग–बगीचों में आए दिन हम जहरीले जीवनाशी

रसायन छिड़कते हैं। इस प्रकार शहरों से लेकर गाँवों तक पर्यावरण की प्राकृतिकता नष्ट होती जा रही है।

पेड़–पौधे और जानवर–हमारे मित्र

पृथ्वी पर जीवन की शुरूआत हरे पौधों से ही हुई है और पेड़–पौधे न हों तो जीवन बिल्कुल असम्भव है। खाने के लिए गेहूँ, चावल, विभिन्न प्रकार की दालें, मसाले, फल–सब्जियां आदि हमें पेड़–पौधों से ही प्राप्त होती हैं। प्राणियों और पेड़–पौधों द्वारा सांस लेते समय प्राणवायु अन्दर ग्रहण की जाती है और सांस छोडते समय कार्बन डाई ऑक्साइड छोड़ी जाती है। इसीलिए शहरों के बीच के पेड़–पौधे, बाग–बगीचों वाले इलाकों को 'शहरों का फेफडा' कहा जाता है। पेड़–पौधों की हरियाली से मन का तनाव दूर होता है और दिमाग के शांति मिलती है। पर्यावरण से ही हमारे अनेक प्रकार की बीमारी भी दूर होती हैं।

करोड़ों वर्ष पहले जमीन के अन्दर दबे जंगलों की लकड़ी से ही धीरे–धीरे कड़ा पत्थर का कोयला बना और सड़–गल कर रिस–रिस कर जमा होता गया। पौधों का रस धीर–धीरे चट्टानों में सुरक्षित मिट्टी का तेल व पेट्रोल बना। पढ़ने–लिखने के लिए शुरू से लेकर आज तक भोज पत्र और आज के कागज के लिए पेड़–पौधों का ही प्रयोग किया गया।

वैज्ञानिकों ने बताया कि अलग–अलग तरह के पेड़–पौधों की पत्तियां विभिन्न गैसों आदि के जहर, धूल आदि से जूझकर पर्यावरण को स्वच्छ रखती हैं। दूसरी ओर पशु हमें दूध, घी, मक्खन, चर्बी, भोजन, ऊन, चमड़ा, कीमती चीजें आदि देते हैं। कई प्राणी हमारी बेरहमी से विलुप्त होते जा रहे हैं, जिन्हें दुबारा देखने के लिए हम तरस जाएंगे। इसलिए इनकी रक्षा करना भी हमारा धर्म है।

धुआं उगलती चिमनियां, कान फाड़ता शोर।
जाती शहरी सभ्यता, अब विनाश की ओर।।

जंगलों के कम होने से विभिन्न जीव–जातियां तो कम होती ही हैं, साथ ही गर्मी बढ़ जाती है और ग्लोबल वार्मिंग की समस्या उत्पन्न हो रही है। वर्षा कम होती है और सारी आबोहवा ही बदल जाती है। भूमि के वस्त्र विहीन हो जाने से वह आसानी से पानी नहीं सोख पाती और कभी सूखे तो कभी बाढ़ की स्थितियां आ जाती हैं। भूमि के दरकने की संभावनाएं

भी बढ़ जाती हैं। वैज्ञानिकों की चेतावनी यही है कि खपत करने के बाद ऐसी योजना रहे कि वह फिर पूरी भी कर दी जाए। प्रयोग के लिए पर्यावरण से प्राप्त की गयी चीज फिर उसे लौटा दी जानी चाहिए इसके लिए विनाश की दिशा में नहीं अपितु नित्य नए निर्माण की दिशा में चलना होगा।

पर्यावरण की सुरक्षा हमारी ही है जिम्मेदारी

भूमि, हवा, पानी, प्राणियों और वनस्पतियों की सुरक्षा का ध्यान सबसे ऊपर है और इस समस्या का निराकरण होना चाहिए अन्यथा भयंकर परिणाम आने वाली पीढ़ियों को भी भुगतने पडेंगे।

1. उद्योगों को नदियों या अन्य जल स्त्रोतों से समुचित दूरी पर स्थापित किया जाना चाहिए उनसे निकलने वाले उत्प्रवाहों को बिना परिशोधन के किसी भी दशा में नदियों या समुद्रों में नहीं डाला जाना चाहिए। उद्योगों से निकलने वाला दूषित पदार्थ और धुएं का सही तरीके से निस्तारण करना चाहिए।

2. पर्यावरण हमारे लिए अनमोल रत्न है। इस पर्यावरण के लिए हम सभी को जागरूक होने की आवश्यकता है। पर्यावरण का सौंदर्य बढ़ाने के लिए हमें साफ–सफाई का भी बहुत ध्यान रखना चाहिए।
3. पेड़ों का महत्व समझ कर हमें ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाना चाहिए। घने वृक्ष वातावरण को शुद्व रखते हैं और हमें छाया प्रदान करते हैं। घने वृक्ष पशु–पक्षी का भी निवास स्थान है। इसीलिए हमें ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाने चाहिए।
4. पेड़ों की अंधाधुंध कटाई पर रोक लगानी चाहिए।
5. वाहनों का इस्तेमान बेहद जरूरत के समय ही किया जाना चाहिए।
6. दूषित और जहरीले पदार्थों के निस्तारण के लिए सख्त कानून बनाने चाहिए।
7. कृषि कार्यों में आवश्यक उर्वरकों तथा कीटनाशकों के स्थान पर जैविक खाद तथा जैविक कीट अवरोधी दवाओं का ही प्रयोग किया जाए और खाली बंजर एवं बीहड़ भूमि पर वनीकरण किया जाए, मृदा की उर्वरा शक्ति का विकास होगा।
8. प्लास्टिक, पॉलीथीन के प्रयोग को नियंत्रित किए जाने की भी आवश्यकता है।
9. जनसंख्या–वृद्वि पर रोक लगाने हेतु आवश्यक प्रयास किए जाएं।
10. परमाणु विस्फोटों और परमाणु परीक्षणों पर पूर्ण नियंत्रण रखा जाए।
11. कूड़े–करकट से होने वाले प्रदूषण से बचने हेतु इसे एक गड्ढे में एकत्रित कर कम्पोस्ट बनाया जा सकता है।

पर्यावरण है हम सबकी जान, इसलिए करो इसका सम्मान।
प्रकृति का मत करो शोषण,सब मिलकर बचाओ पर्यावरण।
पशु पक्षी हैं धरती की शान, और पेड़ हैं धरती की जान,
पेड़–पौधे हैं मानव के लिए वरदान, मत करो इनका अपमान
हर बच्चे को सिखाओ पर्यावरण की रक्षा का सबक
पर्यावरण पर है हम सबका हक।

शिक्षा मानव जीवन के बहुमुखी विकास का एक प्रबल साधन है। इसका मुख्य उद्देश्य मानव के अन्दर शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, एवं बौद्धिक परिपक्वता लाना है। शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु प्राकृतिक वातावरण का ज्ञान अति आवश्यक है। भारतीय संस्कृति में प्राकृतिक वातावरण में ज्ञान अर्जन की परम्परा आरम्भ से ही रही हैं। परन्तु आज के भौतिकतावादी युग में परिस्थितियां भिन्न होती जा रही हैं। एक ओर जहां विज्ञान और तकनीकी के क्षेत्र में नए–नए आविष्कार हो रहे हैं तो दूसरी ओर मानव परिवेश भी उसी गति से प्रभावित हो रहा है। आने वाली पीढ़ियों को पर्यावरण में हो रहे परिवर्तनों का ज्ञान शिक्षा के माध्यम से होना आवश्यक है। शिक्षा के क्षेत्र में पर्यावरण का ज्ञान मानवीय सुरक्षा के लिए आवश्यक है। पर्यावरण के विषय में हमें अपनी बुद्वि, विवेक और मर्यादानुसार इन सब बातों को ध्यान में रखकर उचित रूख अपनाना होगा और पर्यावरण को मेरा–तेरा और सबका पर्यावरण समझकर सही कदम उठाना होगा, उसके प्रति हमारी पवित्र 'निश्छल भावना होनी चाहिए, तभी उसकी सुरक्षा है और हमारा कल्याण है।

पेड़ लगाओ, पेड़ लगाओ
पर्यावरण को दूषित होने से बचाओ।
यही हमारा नारा है
यही ध्येय हमारा है।